बी० ए० द्वितीय वर्ष

पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

देकार्त की विधियाँ :

परिचय : रेने देकार्त का जन्म फ्रांस के तुरेन नगर में हुआ था। उनका शरीर निर्बल किन्तु बुद्धि प्रबल थी। वे एक प्रसिद्ध गणितज्ञ, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक थे। उनके द्वारा कुछ प्रमुख लिखी गई किताबें इस प्रकार है- दार्शनिक पद्धति पर विचार, प्राथमिक दर्शन पर मनन, दर्शन के सिद्धान्त आदि।

रेने देकार्त की पद्धति :

देकार्त आधुनिक युग के पिता कहे जाते हैं। इनका लक्ष्य गणित जैसा ही दर्शन को एक सुदृढ़ आधार प्रदान करना था। इसके लिए वे गणित के नियमों को दर्शनशास्त्र पर पूर्णरूप से लागू करने का प्रयास करते थे।

इस आशय के लिए वे विचार के नियम के तौर पर एक विधि का इजाद किया इन्हें ही देकार्त के सिद्धांत अथवा विधि का

Scanned By KagazScanner

देकार्त की पद्धति संदेह की विधि है। वे सभी पदार्थों, वस्तुओं, एवं विचारों पर एक-एक कर के संदेह करते हैं अन्त में एक ऐसी बिन्दु पर पहुँचते हैं जो संदेह रहित है, इस संदेह रहित बिन्दु, तथ्य या विचार ही दर्शन का आधार बनता है इस आधार पर वो दर्शन के अन्य विचार, जैसे ईश्वर, जगत जैसे अवधारणाओं को सिद्ध करते हैं।

इसके लिए देकार्त विचार के कुछ नियम बनाते हैं - जो इस प्रकार हैं - <u>प्रथम</u> लक्षण सूत्र - किसी भी समस्या पर तब तक संदेह करते जाना चाहिए जब तक की संदेह रहीतता की स्थिति प्राप्त ना होजाय।

Scanned By KagazScanner

2. विश्लेषण सूत्र - समस्या को छोटे छोटे संबंध सरल से सरलतम टुकड़ों में में विभाजित करें।

3. संश्लेषण सूत्र - सरल से जटिल की ओर जाना अर्थात् समस्या पर विचार करते हुए सरल से जटिल की तरफ विचार करना।

4. समाधार सूत्र -

समस्या पर विचार का अंतिम रूप देने के पहले पुनः-पुनः अवलोकन करना कि कहीं उसका कोई भाग छूट तो नहीं गया है समाधार सूत्र कहलाता है।

इन्हीं पद्धति एवं नियमों को आधार मानकर सभी चीजों पर बारी बारी से विचार करने पर निश्चित आधार की प्राप्ति हो जाती है यही देकार्त की पद्धति अथवा देकार्त के सिद्धांत कहे जाते हैं।

—o—

Scanned By KagazScanner